हिरनी के लिए (1993)

अजित कुमार

हिरनी के लिए (1993)

अजितकुमार का यह पाँचवाँ कविता- संग्रह 'हिरनी के लिए' इस अर्थ में पिछले संग्रहों से भिन्न है कि जहाँ उनमें किसिम–किसिम की कविताएँ थीं, यहाँ केवल प्रेम कविताएँ हैं। पर जितने अंशों में प्रेम 'विशुद्ध' से कुछ कम या अधिक एक 'मिश्रित' अनुभव है, ये कविताएँ दुख- तकलीफ़, आशा–आकांक्षा, उदासी–मजबूरी आदि के भी अनुभव से जुड़ी नज़र आएँगी।

वैसे तो, मैकवेथ की भाँति, कइयों के लिए, समूचा जीवन ही 'सन्निपातग्रस्त ज्वर' होता है; यहाँ, इस संग्रह की संक्षिप्त भूमिका में कवि ने जिसे अपनी 'कांजेनिटल' अर्थात 'जन्मजात' मुसीबत बताया है, उससे छुटकारा जब मिलेगा, तब मिलेगा, कडुवे घूँट से कि मीठी गोली से ज्वर, देर या सवेर, कभी-न-कभी टूटेगा। रहा सन्निपात, उसके थमने या बढ़ने का ग्राफ़ सामने रहे, इस लिहाज से, कवि ने पिछले संग्रहों की भी एक-एक कविता पुस्तक के अंत में नत्थी कर दी है। *

हमें आशा है कि जिन्हें उपचार या पथ्य की आवश्यकता न हो, ऐसे पाठक भी इन कविताओं में निहित सजीवता से प्रभावित होंगे और स्फूर्ति पाएँगे।

***(टिप्पणी- वे प्रेम कविताएं यहां दुबारा नहीं दी जा रहीं। वे पूर्व-प्रकाशित संग्रहों में मिलेंगी।)**

‘नोखिया को समर्पित’ शीर्षक कवि की भूमिका-

एक लंबी अवधि में लिखी ये कविताएँ ‘हिरनी के लिए’ शीर्षक से छप रही है जबकि इन्हें ‘मरीचिका के पीछे’ या ‘अँधेरे में छलाँग’ जैसा कोई और नाम भी दिया जा सकता था। प्रेम कोई सुनिश्चित या पूर्व-निर्धारित अनुभव तो होता नहीं; वह अपने इन्द्रधनुषी विस्तार में कब-कहाँ-कैसे झलक उठेगा, कहा नहीं जा सकता। संभव है, वह किसी का असाध्य रोग हो, किसी पर उसका दौरा पड़ता हो, किसी को वह छूत की बीमारी-सा लगा हो और कोई उसके धावे से बचा रह सका हो....

मेरी मुसीबत किसी हद तक ‘कान्जेनिटल’ या जन्मजात मालूम होती है। इस खयाल से भी, मैंने अपने पिछले चारों कविता संग्रहों- ‘अकेले कंठ की पुकार’ ‘अंकित होने दो’, ‘ये फूल नहीं’ और घरौंदा’- की एक-एक कविता इस पाँचवे संग्रह के अन्त में जोड़ दी है। (टिप्पणी- इस एकत्र संचयन में उन्हें दोबारा न छाप कर केवल शीर्षक तथा पुस्तक का उल्लेख किया जा रहा है – ‘आठ औरतें’: ‘अकेले कंठ की पुकार’; ‘नीम की टहनी’: ‘अंकित होने दो’; ‘घोषणा’: ‘ये फूल नहीं’; ‘वही आठ औरतें’: ‘घरौंदा’।)
पर जिस अनोखिया ने मुझे अकसर ‘नो’-किया और बहुधा नोकियाया हो, उसीकी तरह, आपको भी यह सब यदि एक सठियाए व्यक्ति की बुढभस जान पड़े तो निवेदन है कि जहाँ कुछ फल ‘ऐंचड़पाका’ (अकाल परिपक्व) होते हैं, वहाँ कार्बाइड की गर्मी से पीले पड़ गए कितने ही आम कच्चे रह जाते हैं।
फिर भी, आम का यह सपना तो होगा ही कि मिट्टी , धूप और बारिश में पककर जब वह टपकेगा तो रूप, रस, गन्ध और स्वाद से किसी को भी परितृप्त कर सकेगा....

उम्र की माप- बीस-तीस, साठ-सत्तर- केवल गति या गणित है; परिणति में, जो सोलह वही छिहत्तर, जो छत्तीस वही तिरसठ। ‘ग्रो ओल्ड अलांग विद मी, द बेस्ट इज़ यट टु बी’ में भरोसा मुझे रहा है, अब भी है।

- **अजितकुमार**

ज़रूरत

मेरे साथ जुड़ी हैं कुछ मेरी ज़रूरतें
उनमें एक तुम हो।

चाहूँ या न चाहूँ
जब ज़रूरत हो तुम, तो तुम हो मुझमें
और पूरे अन्त तक रहोगी।

इससे यह सिद्ध कहाँ होता कि
मैं भी हूँ तुम्हारे लिए
उसी तरह ज़रूरी ?

देखो न !
आदमी को हवा चाहिए ज़िन्दा रहने को
पर हवा तो
आदमी की ज़रूरत नहीं समझती,
वह अपने आप जीवित है।

वहाँ डाली पर खिला था एक फूल,
छुआ तितली ने...
रस ले कर उड़ गयी।
पर फूल वह तितलीमय हो चुका था।

झरी पँखुरी एक : तितली।